होली का आध्यात्मिक रहस्य

अध्यात्म जगत की एक महत्वपूर्ण और तथ्यात्मक बात यह है कि आत्मा निरन्तर ही अपने अतीत के आदि स्वरूप के आत्मिक गुणों के अनुभव की ओर लौटना चाहती है। वह अपनी पूर्णता के अनुभव की ओर सतत् उन्मुख है। उत्थान और पतन जन्म और पुनर्जन्म का एक चक्रीय क्रम है। स्थिति पुन: अपने आदि स्थिति की ओर लौटेगी ही लौटेगी। चैतन्य शक्ति आत्मा में उसके जीवन यात्रा के आदिकाल में किये हुए निज गुणों का अनुभव संचित है। वह अनुभव अलौकिकता का अनुभव है। यदि सम्पूर्ण सृष्टि को गौर से देखें तो प्रकृति के बहुत गहरे रहस्यों को समझा जा सकता है। यह समझा जा सकता है कि सृष्टि का कण-कण एक क्रमिक गति कर रहा है। ऊर्जा अपने मूल स्रोत को मिलने के लिए निरन्तर प्रवाहित है। परस्पर विरोधी ऊर्जाएं सृष्टि के निर्माण में निरन्तर कार्य कर रही हैं।

दो विरोधी शक्तियों के अस्तित्व में होने से सृष्टि का सृजन होता है। दो विपरीत शक्तियों का होना सृष्टि के निर्माण का एक सिद्धांत है। ये शक्तियाँ विरोधी होते हुए भी परिपूरक होती हैं। जिस प्रकार द्वार को बनाने के लिए दो उल्टी (एक दूसरे के विपरीत) ईंटें लगाकर दरवाजे का मेहराब (आर्च) बनाया जाता है, तभी दरवाजे का निर्माण होता है। **ठीक उसी प्रकार शक्ति का दो हिस्सों में विभाजित होना सृष्टि के सृजन की अनिवार्यता है। ये विरोधी शक्तियाँ यदि बिना किसी वासना के और बिना किसी शर्त के मिलती है तो सृजनात्मक घटना घटती है। यह सृजन अपने आप में एक नेचुरल (आध्यात्मिक) मायने रखता है।** चेतना के अपने निर्बन्धन स्वरूप से परे की स्थिति से सतोप्रधान (पवित्र) आत्माओं (सितारों) का जन्म होता है। दार्शनिक नीत्से के अनुसार आउट ऑफ केआर्स, स्टार्स आर बोर्न। सतोप्रधान सृष्टि का सृजन आत्मा की सतोप्रधान (निर्वासना/निर्बन्धन) स्थिति से ही सम्भव है। भावार्थ यह है कि नितान्त निर्बन्धन की आत्म-चेतना (अशरीरीपन) के शिखर अनुभव को बढ़ाने से ही अलौकिक रास सम्भव है। अलौकिक रास की भावदशा से ही सतोप्रधान संसार की रचना सम्भव हो सकती है।

विश्व में अनेक देशों में होली अलग-अलग प्रकार से मनाई जाती है। लेकिन रूप और प्रकार अलग अलग होते हुए भी सबकी मनोस्थिति खुशी और उमंग उल्लास भरी होती है। प्राय: सभी नृत्य और रास की अन्तर्भाव दशा में होते हैं। रास का गहरा अर्थ होता है कि जहाँ शक्तियाँ बेशर्त मिल रही हों। शक्तियों के मिलने में कोई आसक्ति या अपेक्षा अवरोध नहीं बन रही हो तो सही अर्थों में रास का जन्म होता है। ध्यान देने जैसी बात तो यह है कि ऐसी भावदशा में मनोरंजन का मनोभाव भी नहीं होता है। इस स्थिति में शक्तियों (ऊर्जाओं) का स्वभावत: सिर्फ पारस्परिक अतिशय बहाव हो रहा होता है। दूसरे शब्दों में शक्तियों (आनन्द की भावदशा) का आपस में स्वभावत: बेशर्त ओवरफ्लोइंग ही रास कहलाता है। यह शक्तियों के बहाव की भावदशा व्यक्तिवाची (इन्ड्वीज्वल) नहीं रह जाती बल्कि आध्यात्मिक (अद्वैत) हो जाती है। ऊर्जा के इस स्वाभाविक अतिरेक के उमड़ाव में भौतिक देह भेद की चेतना भी सुप्त हो जाती है। चेतना मात्र शक्ति के रूप में बह रही होती है। **अध्यात्म की यात्रा के अनुभव यह बताते हैं कि अलौकिक रास (नृत्य) की भावदशा में चैतन्य ऊर्जा अपनी निजता में पूर्णता का अनुभव करती है। इस स्थिति की**

अनुभूति खुशी की स्थिति की अनुभूति से भी आगे की बात होती है। इसलिए ही होली का पर्व एक अद्वितीय अर्थ को लिये हुए हैं।

पौराणिक कथाओं में होली के आध्यात्मिक रहस्य को समझाने का प्रयास किया गया है। बौद्धिक वर्ग में यदि आध्यात्मिकता दृष्टि जागृत हो तो रहस्य को समझा जा सकता है। वृतांतों में आसुरी और ईश्वरीय शक्तियों में परस्पर सामना हुआ बताया गया है। ईश्वरीय शक्तियों की विजय का वर्णन है। शक्तियों की सिद्धियों की प्राप्ति स्वयं व सर्व के हित और सुरक्षा के लिए की जाती है। शक्तियों की सिद्धियों के परोक्ष में यदि आसुरी मनोवृत्ति है तो ऐसी सिद्धियाँ अन्तोगत्वा बेकार हो जाती हैं। वे सही समय पर कार्य नहीं करती। **ईश्वरीय शक्तियों के समक्ष ये आसुरी शक्तियाँ पंगु हो जाती हैं, जैसा कि भक्त प्रल्हाद और होलिका के प्रसंग में बताया गया है। परिवर्तनशील संसार में भौतिक देह का अन्त निश्चित है, इसलिए प्राप्त शक्तियों की भी अपनी सीमा होती है। सीमित और अल्पकालीन धन, पद, प्रतिष्ठा आदि शक्तियों का गर्व करना भारी भूल होती है।** ईश्वरीय वरदानों के प्राप्त होने का गर्व कैसा! वरदानों का नकारात्मक रूप से गलत प्रयोग की अति होने पर वे अन्तत: समय पर काम नहीं करते। अन्तोगत्वा ये वरदानी शक्तियाँ भी नियति के नियमानुसार स्वभावत: छिन जाती हैं। संसार का यह अकाट्य सिद्धांत है कि ईश्वरीय (शुभ) शक्तियाँ आसुरी शक्तियों से सदा ही शक्तिशाली होती हैं। आसुरी शक्तियों पर परमात्म शक्तियों की विजय होती ही है।

इस गतिमान संसार में सब कुछ निरन्तर बदल रहा है, जो आज इस पल है वह अगले ही क्षण बदल जायेगा। जो कल था वह आज नहीं है, जो आज है वह कल नहीं होगा। जो आज आपका है वह कल किसी और का था। कल किसी और रूप में किसी और का था और कल किसी और रूप में किसी और का हो जायेगा। यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं है। निरन्तर बदलते हुए इस संसार में बीती को बिसार ही देना उचित है। वर्तमान में जीयें लेकिन वर्तमान में आसक्त ना हो जायें। वर्तमान को भूतकाल बनना ही है। **क्षण-क्षण परिवर्तित होते हुए से आसक्ति कैसी! जीवन की स्वाभाविकता तन और मन से हल्का रहने में है। अनासक्त बनकर कर्म करने में ही जीवन का सार तत्व छिपा है।**

हर विचार का अपना भार और आकार होता है। स्मृति पटल पर भूतकाल की स्मृतियों को पुन: पुन: याद करने से आत्मा के आन्तरिक संस्थान पर भार बढ़ जाता है। होली का उत्सव व्यर्थ और नकारात्मक सोच को समर्थ और उच्चता में बदलने का संदेश देता है। बीती को भूल जाना ही हितकर है। **विघ्न-बाधाओं में भी अचल रहते हुए ईश्वरीय शक्ति में गहरी आस्था रखना सिखाता है त्यौहार। प्राप्त ईश्वरीय शक्तियों का विश्व कल्याण के कार्य में सदुपयोग करने की अलौकिक प्रेरणा देता है यह उत्सव। परमात्मा की याद (राजयोग) में जादुई शक्ति है, इसके रहस्य को प्रकट करता है यह उत्सव।** अत: इस होली के अवसर पर हम अध्यात्म के दर्पण में स्वयं को देखें। अपना आत्मावलोकन करें। होली के आध्यात्मिक रहस्य को समझकर होली की अलौकिकता को प्रत्यक्ष करें।

बी.के.किशनदत्त अनुदर्शी, ब्रह्माकुमारीज़ शान्तिवन